3

हमारी सामर्थ परमेश्वर से है

(2 कुरिन्थियों 3:4-4:6)

''सो ऐसी आशा रखकर हम हियाव के साथ बोलते हैं ...''(3:12)।

मैं जब प्रत्याशियों को सार्वजनिक पद के लिए अभियान चलाते देखता हूं तो देश की सबसे गम्भीर समस्याओं का सामना करने में उनके पूरे आत्मविश्वास को देखकर कई बार बड़ा हैरान होता हूं। कोई प्रत्याशी भी यदि समस्याओं का सामना करने के लिए पूरी ताकत से आत्मविश्वास न दिखाए तो उसे मतदताओं का विश्वास नहीं मिल पाएगा। इसलिए उससे बिना अकड़ दिखाए हमें यह बताने की उम्मीद की जाती है कि वह महंगाई, बेरोजगारी जैसी चुनौतियों का सामना कैसे करेगा। कई गम्भीर विचारक हमें बता सकते हैं कि ये समस्याएं आदमी के बस की बात नहीं हैं, परन्तु प्रत्याशी यह आत्मविश्वास दिखाता है कि चाहे जो भी हो जाए, हर चुनौती का सामना करने में सक्षम है।

हम वे लोग हैं जो ऐसे आत्मविश्वास वाले को दृढ़ता से कहता है कि कोई काम इतना बड़ा नहीं है कि किया न जा सके, सराहते हैं। हम में से कई लोगों ने मीडिया में दिखाए जाते विज्ञापन सेल्फ हेल्प के कोर्स देखें होंगे, जो हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए तैयार किए गए हैं। हेल्प या सहायता के ऐसा ही एक कोर्स हमें ''छिपे हुए संसाधनों को खोजने'' में सहायता करने का दावा करना है, जिसमें हमें व्यवहारिक रूप में किसी भी कार्य में सफलता मिले। द *साउंड ऑफ़ म्यूजिक* फिल्म देखकर हमें पता चलता है कि मारिया एक और बड़े कठिन परिवार में बच्चों को घर में पढ़ाने की अपनी नई जिम्मेदारी का पता चलने पर वह खुश होती है। हमें अच्छा लगता है कि वह अपने काम पर यह गाते हुए जाती है, ''मुझे खुद पर यकीन है।''

यह सच है कि कुछ चुनौतियों का सामना अपनी क्षमता पर विश्वास के बिना किया जा सकता है, पर यह भी सच है कि आत्मविश्वास विकृत और खतरनाक भी हो सकता है। जन नेता के आत्मविश्वास से हो सकता है कि वह अपनी शक्ति को अधिक ही मान बैठे और अपनी क्षमताओं पर बेतुका भरोसा कर ले। सेल्फ हेल्प के कोर्स के बिना यह सुझाव दिए कि आत्मविश्वास का इस्तेमाल कहां करना है, यही संकेत देगा कि यह अपने आप में एक लक्ष्य है। ध्यान दिए जाने वाली मान्यता यह हो सकती है कि आत्मविश्वास किसी उद्देश्य से नहीं, बल्कि अपने आप को आगे बढ़ाने की कुंजी है। इस कारण मारिया के गीत ''मुझे खुद पर भरोसा है'' के शब्दों में खतरा है।

कलीसिया की सेवकाई में आत्मविश्वास एक महत्वपूर्ण कारक है। सिखाने वाले एल्डर और डीकन में एक विशेष प्रकार का आत्मविश्वास होना आवश्यक है। पर इससे फर्क पड़ता है कि हम किस प्रकार का आत्मविश्वास दिखाते हैं। कई लोग लीडरशिप के लिए बुलाहट का उत्तर

उस कार्य से अधिक ही प्रभावित होकर देते हैं। उनका यह देखना सही है कि परमेश्वर के काम में भाग लेने के लिए बेहतरीन ही चाहिए। परमेश्वर का कार्य इतने असाधारण ढंग से मांग करता है कि वे जिम्मेदारी की बात से बचते हैं। और लोग अपनी क्षमताओं में पूरे भरोसे के साथ किसी महत्वपूर्ण कार्य को लेते हैं। वे यह मान लेते हैं कि मसीही सेवा में भी व्यापार और कारोबारी संसार में काम आने वाली दिलेरी ही काम करती है। वे यह मान लेते हैं कि लीडरशिप की अन्य किसी भी किस्म की तरह, कलीसिया की लीडरशिप भी अपने ''अपने आप को बेचना'' है जैसा कि 2 कुरिन्थियों में सुझाव है, दोनों ही ढंग मसीही ढंग का बिगाड़ हैं।

अध्याय 3 में पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया को अपने आत्मविश्वास की पुष्टि करता है: ''हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं'' (3:4)। बाद में वह कहता है ''हम हियाव के साथ बोलते हैं'' (3:12)। इसलिए सेवकाई पर इस पुस्तक में महत्वपूर्ण मुद्दा उस सेवक के आत्मविश्वास का है जो अपने सामने आए काम को करने से घबराने से इनकार करता है। मसीही की पहचान अपनी भूमिका को निभाने में उसका आत्मविश्वास है।

किस प्रकार का भरोसा (3:4-6)

स्पष्टतया पौलुस ने यह शब्द इसलिए लिखें क्योंकि औरों ने सुझाव दिया था कि अपने नाम पर भरोसा रखने का उसका कोई कारण नहीं है। अन्य अपने आप को ''मसीह के सेवक'' (11:23) कहते थे, जो कुरिन्थिसु में असीमित आत्मविश्वास से आए थे। 3:1 के अनुसार वे ''सिफारिश की पत्रियां'' लेकर आए थे, जिनमें उनके बड़े कामों की बात लिखी थी। यह तथ्य कि वे ''अपनी प्रशंसा आप'' (10:12) करते रहते थे, दिखाता है कि उनमें आत्म विश्वास की कमी नहीं थी। स्पष्टतया उन्होंने कहा था कि पौलुस का सिफारिशी पत्र न ले आ पाना इस बात का संकेत है कि उसे आपने काम में भरोसा नहीं है। इस प्रकार वे सेवा करने की अपनी क्षमता पर संदेह किए बिना अपने आप को दूसरों से नापते थे।

इस प्रकार के आत्मविश्वास के जवाब में पौलुस ज़ोर देता है कि ''हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं'' (3:4)। उसका भरोसा झूठे शिक्षकों के भरोसे से अलग किस्म का था, क्योंकि वह कहता है कि, ''यह नहीं, कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें'' (3:5)। परमेश्वर का कार्य इतना बड़ा है कि किसी भी मानवीय सेवक में उसकी योजनाओं को पूरा करने की क्षमता नहीं है। विरोधियों ने सिफारिश के अपने पत्रों में शायद कार्य के लिए सक्षम होने का दावा किया था। मसीही सेवकाई में हमारे भरोसे का यह विलक्षण तथ्य है। हम अपनी निजी क्षमता को जानते हैं तौ भी हमें अपनी सेवकाई में भरोसा है।

कुरिन्थियों के साथ चर्चा में ''योग्य'' (*hikanos*) के लिए पौलुस का शब्द महत्वपूर्ण था, शायद इसलिए क्योंकि कुछ लोग ''योग्य'' होने का दावा करते थे। परमेश्वर के विजय काम की बात कहने के बाद पौलुस ने कहा, ''भला, इन बातों के योग्य [*hikanos*] कौन है ?'' (2:16)। इसका सांकेतिक उत्तर था कि ''कोई नहीं।'' औरों ने पौलुस के बोलने की योग्यता और उसकी खराब सेहत को देखा होगा और निष्कर्ष निकाला कि वह ''योग्य नहीं'' है। पौलुस ने आरोप को पूरी तरह से स्वीकार किया।

विडम्बना यह है कि पौलुस पर इस आरोप को मान लेता है कि वह योग्य नहीं है, पर बात पूरे भरोसे के साथ करता है। इसका कारण यह है कि ''... हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं, बरन आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है'' (3:5, 6)। पौलुस को भरोसा अपने व्यक्गित दानों और शक्तियों से नहीं मिला क्योंकि वह दिखाता है कि परमेश्वर की सामर्थ ने उसे बुलाया है और परमेश्वर उसे अपनी योजना में इस्तेमाल कर सकता है।

परमेश्वर ने अपना काम हमेशा अपने ''सेवकों'' के द्वारा ही करवाया है, जिनसे कइयों को अपने व्यक्तिगत करिश्में का पता ही नहीं था। पुरानी वाचा के ''सेवक'' मूसा अपनी योग्यताओं पर गम्भीर संदेह थे (तुलना निर्गमन 4:10)। फिर भी परमेश्वर ने उसे अपने लिए बोलने और काम करने ''के योग्य बनाया।'' आमोस ने ज़ोर दिया कि वह न तो नबी है और न नबी का बेटा (आमोस 7:14) था। तौ भी वे योग्य थे क्योंकि परमेश्वर ने ''उन्हें योग्य बनाया।'' पौलुस का भरोसा इस आश्वासन से बढ़ा कि परमेश्वर उसे एक निर्णायक कार्य में इस्तेमाल कर सकता है।

इस कार्य की घोषणा यिर्मयाह द्वारा सदियों पहले की गई थी, जिसने एक नये दिन का वर्णन किया। जब परमेश्वर ने ''इस्राएल और यहूदा के घरानों के साथ एक नई वाचा'' बांधनी थी (यिर्मयाह 31:31)। उस वाचा के विपरीत जो पत्थर पर लिखी गई थी, यह वाचा ''उनके हृदय पर'' लिखी जानी थी (यिर्मयाह 31:33)। पौलुस का आसाधरण दावा यह है कि जैसे मूसा पुरानी वाचा का सेवक था वैसे ही वह उस वाचा का ''सेवक'' है। वास्तव में उसके पाठक उसकी सिफारिशी चिट्टी यानी वह पत्र जिसे पौलुस द्वारा ''सेवकों के सम्मान'' (3:3), ''... हृदय की मांस रूपी पटियों पर'' लिखा गया। यानी उसने अपने काम के परिणाम को पहले ही देख लिया है। परमेश्वर की नई वाचा के ''पहुंचाने वाले'' के रूप में अपने काम के द्वारा लोगों के बदले हुए जीवनों को देखा है। ''अपने हृदय पर लिखी'' परमेश्वर की इच्छा वाली कलीसिया पौलुस के द्वारा बनी। इस कारण वह कहता है कि ''हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा भरोसा रखते हैं।'' यह ''आत्म विश्वास'' के प्रसिद्ध विचार से अलग था।

पौलुस जैसे भरोसे ने आत्म निर्भरता और बहुत बड़े लगने वाले कार्य से प्रभावित होने के विपरीत प्रसिद्ध [और विरोधियों के] बिगाड़ होने से बचाया। दोनों ही संस्करण कलीसिया के लिए वर्तमान परीक्षाएं हैं और समान रूप में विनाशकारी है। हम आम तौर पर 3:1 वाले सिफारिशी पत्रों की तरह आंकड़े बताने के प्रभाव में होते हैं, जिसमें हमारी प्राप्तियां हों। बाबुल के बर्जु वाले लोगों की तरह ''अपना नाम करना'' चाहते थे (उत्पत्ति 11:4), कलीसियाएं ऐसे सम्बन्धों में लग सकती हैं, जिससे दूसरों में उनका नाम हो और वे ''वे अपने आपको बेच'' सकें। योग्यता को हमारे शेष समाज में काम के मानकों से नापा जा सकता है। हम मिशनरियों, सिखाने वालों, इवैंजलिस्टों व अन्यों को सफलता के केवल बनावटी मानकों से नाप सकते हैं। दूसरों की आत्मनिर्भरता को पौलुस का उत्तर कलीसिया के लिए सहायक हो सकता है। हमारा भरोसा हमारी योग्यताओं में नहीं, बल्कि इस तथ्य में है कि ''हमारी योग्यता परमेश्वर से है।'' हमें चाहिए कि ''अपना भरोसा न रखें, बरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है'' (1:9)।

पुराने नियम से एक सबक (3:7-16)

अपनी बात को साबित करने में बेशक पौलुस कई बार पुराने नियम के हवाले देता है पर विस्तृत सबक के लिए वह इसका इस्तेमाल बहुत कम करता है। इसलिए 3:7–16 में हम चकित होते हैं कि अपनी सेवकाई की सफाई के मध्य में पौलुस पुराने नियम से एक लम्बा सबक लेता है। वह उस अवसर को जब सीने पर्वत पर परमेश्वर से बातें करने के बाद मूसा चमकते हुए चेहरे के साथ पहाड़ से नीचे आया था (निर्गमन 34:29–35)। इस कहानी में मूसा की महिमा और सामर्थ का पूरा सुझाव था कि जिसे दूसरों से अलग किया। मूसा की विलक्षण महिमा को दिखाने के लिए रब्बियों द्वारा इसे सदियों से इस्तेमाल किया जाता रहा था। यह तथ्य कि लोगों के सामने आने पर मूसा ने अपना मुंह अपने मुंह को पर्दा डालकर ढक दिया था, उसकी सेवकाई का भयावहता का संदेश था। अपने काम के बारे में बताने के लिए पौलुस ने उस महिमामय सेवकाई की कहानी को चुना।

हम इस विशेष स्थान में उस कहानी से सबक लेने के पौलुस के कारण के बारे में नहीं बता सकते। वह और कहीं इसकी बात नहीं करता। यह सम्भव है कि विरोधी मूसा की तरह महिमामय होने के दावे कर रहे थे। मूसा के सामर्थी कामों और शानदार रौब के सामने पौलुस कुछ भी नहीं था। उसकी तुलना में पौलुस की सेवकाई कोई खास नहीं थी। मूसा से तुलना पौलुस को नीचा दिखाने के लिए होनी चाहिए थी कि उसकी सेवकाई शक्तिहीन और अप्रसिद्ध थी। मूसा की सेवकाई सामर्थ के कामों और शक्ति से भरी थी। दूसरे लोग चाहे अपने आप को मूसा से मिला रहे थे, पर पौलुस मूसा की सेवकाई की महिमा से इनकार नहीं करता। वास्तव में 3:7–11 में आने वाला ''तेज'' (*doxa*; NIV, ''महिमा'') उस ''सेवकाई'' के लिए जिसमें मूसा था बार-बार आता है। पौलुस पुराना नियम पढ़ता है, और उसे मालूम है कि यह परमेश्वर की ओर से है। कहानी का रौब ज़बरदस्त था, क्योंकि यह महिमा परमेश्वर की ओर से थी। तब यह सेवकाई किसी मनुष्य की नहीं थी। मूसा का चमकता चेहरा यह याद दिलाता था कि मनुष्य के काम के पीछे ईश्वरीय सामर्थ है।

मसीही लोगों को यह याद रखना आवश्यक है कि वे अपने काम को अच्छी तरह केवल तभी समझ पाएंगे यदि उन्हें पुराने नियम की गहरी समझ हो। आरम्भिक कलीसिया ने पुराने नियम को कभी नये नियम से अलग करने की इच्छा नहीं की। परमेश्वर के लिए हमारी सेवकाई मूसा की सेवकाई का आगे बढ़ाना है। इसलिए हम ''यहोवा के वचन'' को ऐसे सुनते हैं, जैसे यह नबियों को सौंपा गया था। पौलुस की तरह हम इस बात की समझ रखते हैं कि पहली वाचा ''तेज के साथ आई'' (3:7)। यह ऐसी सामर्थ से भरी हुई है, कि हम जानते हैं कि हम बिना इस बड़ी रोशनी के दरिदर हो जाएंगे।

उससे भी बड़े तेज का वर्णन 3:7–11 में किया गया है। यह मानते हुए कि मूसा की सेवकाई चमक के साथ दी गई थी, पौलुस दिखाता है कि आत्मा की सेवकाई की महिमा उससे भी बड़ी है। पहाड़ पर से उतरते हुए मूसा की शान की पौलुस की सेवकाई की शान से कोई तूलना नहीं थी। यह सेवकाई संसार के अंधकार में परमेश्वर का अन्तिम चमकता प्रकाश था। इसमें जीवनों को बदलने और ''धार्मिकता'' के लिए सम्भालकर रखने की सामर्थ है (3:9)। पहले वाली ज्योति का प्रकाश अच्छा था पर बड़ी ज्योति के सामने आने पर इसकी उसका प्रकाश मध्यम

पड़ गया (3:10)।

पौलुस को मालूम है कि उसकी सेवकाई पर आक्रमण हुआ है, और उसे यह दिखाने की चुनौती दी गई है कि वह किसी परेशान यानी कलीसिया के साथ अपने असफल प्रयास से चालता क्यों जा रहा था। पौलुस सेवकाइयों की तुलना कर रहा है। वह जानता है कि उसे परमेश्वर की सेवा अर्थात मूसा को दिए जाने वाले काम से बड़ा काम करने को बुलाया गया है। औरों का दावा है कि वह सेवक होने के अयोग्य है क्योंकि उसमें ''करिश्मा'' और तेज की कमी है। परन्तु उसे मालूम है कि नई तरह की सेवकाई में उस महिमा से अलग किस्म की महिमा है, जिसकी लोग उम्मीद करते हैं। वह संसार की सबसे बड़ी लहर में परमेश्वर का प्रतिनिधि है।

पौलुस के विरोधियों ने बेशक कहा कि उनके काम की ''महिमा'' मूसा के चमकते चेहरे की तरह दिखाई देती है, स्पष्टतया अपनी शानदार प्राप्तियों और अनुभवों पर ज़ोर देते हुए। परन्तु पौलुस महिमा को नापने के एक और ढंग की ओर ईशारा करता है। महिमा क्रूस में भी है। कलीसिया को यह याद रखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को एक अलग प्रकार की महिमा के लिए बुलाया है जो दूसरों को क्रूस को दिखाती है।

प्राचीन समयों में निरीक्षक भी कुरिन्थी की कलीसिया के साथ चकित होते होंगे कि पौलुस जैसा अप्रभावशाली व्यक्ति इतने यकीन से कैसे बोल सकता है। ''इसलिए ऐसी आशा रखके हम हियाव के साथ बोलते हैं'' (3:12)। वह दिए गए काम से घबराता नहीं है। ''हियाव'' (*parrhesia*) पौलुस की सेवकाई की मुख्य विशेषता है। अध्याय 3 की मुख्य सुर यह है कि यह आदमी जिसकी विश्वसनीयता पर संदेह किया जाता है ''भरोसा'' (3:4), ''हियाव'' (3:12), और ''स्वतन्त्रता'' (3:17) है। दूसरे लोगों द्वारा उसकी सेवकाई को चुनौती दिए जाने पर भी वह स्वतन्त्र है। वह लोगों के स्वाद के अनुसार बदलने के लिए अपने संदेश में बदलाव नहीं लाता, न ही वह विश्वास न करने वालों के सामने खामोश रहता है।

प्राचीन संसार में ''हियाव'' के लिए पौलुस का शब्द प्रसिद्ध लोगों में महत्वपूर्ण माना जाता था। इस शब्द का अर्थ ''बोलने की स्वतन्त्रता'' है। यह समझदार व्यक्ति के बर्ताव का वर्णन करता था, जो नापसन्द होने के बावजूद किसी राजा या तानाशाह के सामने निर्भय होकर सच बताता है। साइनिक (प्राचीन यूनानी के दार्शनिक) पाठशाला को फाउंडर डायोजीन की कहानी बताई जाती है। एक बार उसके पास सिकन्दर महान आ गया जिसने दार्शनिक से पूछा कि महान सेनापति उसके लिए क्या कर सकता है। उसका उत्तर था ''ज़रा हट के खड़े हो ताकि धूप आ सके।'' उसे अपने संदेश पर इतना यकीन था। इस कारण वह अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता और निडरता के लिए प्रसिद्ध था।

पौलुस अपनी सेवकाई की महिमा के कारण स्वतन्त्रता (3:17) और हियाव (3:12) के साथ बोलता था। मूसा ने अपनी सेवकाई की घटती महिमा को इस्राएल से छिपाने के लिए परदे का इस्तेमाल किया (3:13), जिस कारण पौलुस के समय में भी कई लोग उलझन में थे और उनकी समझ पर ''पर्दा'' पड़ा हुआ था। अपनी प्राप्तियों पर घमण्ड करने वालों सहित कुछ लोगो के ''मनों पर'' पर्दा अभी भी बना हुआ था (3:14, 15) क्योंकि उन्होंने नई वाचा की महिमा जो उसे बड़ी थी, को पहचाना नहीं था। अपने सीमित दृष्टिकोण में उनकी नज़र में पौलुस का भरोसा मूर्खता और उसकी सेवकाई प्रभावहीन है। परन्तु पौलुस को तो उसकी स्वतन्त्रता है जो उससे

बड़ी महिमा को देखने के लिए ''प्रभु की ओर फिरता'' है (3:16, 17)। सच्चाई से बढ़कर स्वतन्त्रता देने वाला और कोई नहीं है। वह कहता है, ''प्रभु तो आत्मा है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतन्त्रता है'' (3:17)।

बदल जाने पर (3:18)

यह असाधरण स्वतन्त्रता तब पता चलती है जब ''हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं'' (3:18)। परमेश्वर के साथ मेरे और मूसा केवल अकेला ही बदला था। अब ''हम सब'' यानी पौलुस और पूरी कलीसिया और उसके जैसे बनाए जा रहे हैं। 1 यूहन्ना 3:2 में हमें बताया गया है, ''हम उसके समान होंगे।'' ''बदलते'' के लिए यूनानी शब्द मैटामोर्फियो है, जो अंग्रेज़ी में ''metamorphosis'' के रूप में है। यह शब्द सुझाव देता है कि मसीही व्यक्ति मसीह को देखते हुए ''रूप का बदलाव'' या ''आकार का बदलाव'' अनुभव करता है (रोमियों 12:2)। हमें अपने मनों के नया हो जाने से ''बदल जाने'' (*metamorpheo*) के लिए कहा गया है। गलातियों 4:19 में पौलुस कहता है: ''... जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए।''

मसीह व्यक्ति का ''रूप'' उससे बनता है जो उसने देखा है। यदि हम मसीह की महिमा को देखते है तो हम मूसा की तरह उस तेज में बदल जाएंगे। ''देखना'' के लिए शब्द (*kalop-trizomai*) एक मजबूत शब्द है और इस शब्द का इस्तेमाल ''टकटकी लगाना'' या दर्पण ''ध्यान करना'' के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यह शब्द पानी के कुण्ड मे या खराब दर्पण में आकृति को देखने वालों के एक टक देखने और ध्यान से गौर करने का सुझाव देता है। टकटकी लगाकर लीन हो जाने के विाचार के साथ यह शब्द मसीही व्यक्ति के मसीह को ताकने के लिए उपयुक्त है।

जो कुछ हमे देखते हैं उसी से हमें रूप मिलता है। यदि हम लज्जाजनक बातों को देखते हैं तो हमारे अन्दर भी वही झलक आने लगेगी। पौलुस के विरोधियों की तरह यदि हमें अपनी संस्कृति के मूल्य का रूप दिया गया है तो हम उन्हीं मापदण्डों का इस्तेमाल करते हुए, जो बाज़ार में इस्तेमाल किए जाते हैं। अपने कार्यक्रमों को अपनाएंगे। कलीसिया के पास कहने को कुछ नहीं होगा। यह तो केवल दूसरों की झलक ही होगी। पर यदि हमारी टकटकी उस आदमी पर हो जिसने अपने आपको दूसरों के लिए दे दिया तो हम इसी प्रकार के तेज़ मे बदल जाएंगे। यदि हम उसके द्वारा बदल जाते हैं तो हमारे अन्दर भी पौलुस वाला भरोसा, हियाव और स्वतन्त्रता आ जाएगी।

यदि मसीही लोग उससे जिसे वे टकटकी लगाकर देखते हैं। बदल जाते है तो यह मसीही आदमी की अलग पहचान होगी। हम सबको निस्वार्थ प्रेम की कहानी के रूप में मिलेगा। हमें ऐसे अगुओं की तलाश होगी, जिन्हें ''परमेश्वर की महिमा देखने'' का इतना अवसर मिला कि उनके जीवनों की कहानी बदल गई। हमारी सेवकाइयों को नापने का एक ही पैमाना होगा कि वे उसके प्रभाव को दिखाती हैं, जो सेवा करने के लिए आया।

सारांश

हिटलर के शासन के समय किसी श्रद्धालु विश्वासी को नाज़ी अदालत में बुलाया गया। उस विश्वासी के अपनी गतिविधियों का उत्तर सच्चाई से देने पर उसे लगा कि कमरे मे एक मात्र स्वतन्त्र व्यक्ति केवल वही है। जज और सिपाही सब भय में रह रहे थे। उनके चेहरों से उनकी चिन्ता दिखाई दे रही थी। स्वतन्त्र केवल वह विश्वासी था जो किसी और प्रभु की सेवा करता था। इस तथ्य से उसे बोलने का भरोसा दिया।

भरोसा मसीही की पहचान है। यह आत्मविश्वास नहीं, बल्कि वह ज्ञान है कि हमने एक महिमा को देखा है जो हमें अपनी संस्कृति के मूल्य दिखाने वाले प्रभावों से आज़ाद करती है। हम परमेश्वर के लिए दिलेरी से बात कर सकते हैं क्योंकि ''हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है'' (3:5)।